श्री आरती संग्रह

मंगलमूर्तीची आरती

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची।।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।।
सर्वांगी सुंदर उटि शेंदुराची।।
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची।।१।।
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती ।।
दर्शनमात्रें मनकामना पुरती।।धृ०।।

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा।।
हिरेजडित मुगुट शोभतो बरा।।
रुणझुणती नूपुरे चरणीं घागरिया।। जय।। २।।

लंबोदर पितांबर फणिवरबंधना।।
सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना।।
दास रामाचा वाट पाहे सदना।।
संकटी पावावें निर्वाणी रक्षावें सुरवरवंदना।।
जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।। दर्शन०।।३।।

गणराजाची आरती

शेंदुर लाल चढायो अच्छा गजमुखको।।
दोंदिल लाल बिराजे सुत गौरीहरको।।
हाथ लिये गुडलड्डू साई सुरवरको।।
महिमा कहे न जाय लागत हूं पदको।।१।।
जय जय जी गणराज विद्यासुखदाता।।
धन्य तुमारा दर्शन मेरा मन रमता।।धृ०।।
अष्टौसिद्धि दासी संकटको बैरी।।
विघ्नविनाशन मंगलमूरत अधिकारी।।
कोटिसुरजप्रकाश ऐसी छब तेरी।।
गंडस्थलमदमस्तक झुले शशिबिहारी।।जय०।।२।।
भावभगतसे कोई शरणागत आवे।।
संतत संपत सबही भरपूर पावे।।
ऐसे तुम महाराज मोको अति भावे।।
गोसावीनंदन निशिदिन गुण गावे।।३।।

गणपतीबाप्पाची आरती

तूं सुखकर्ता तूं दुःखहर्ता विघ्नविनाशक मोरया।
संकटीं रक्षी शरण तुला मी, गणपतीबाप्पा मोरया।।धृ०।।

मंगलमूर्ती तूं गणनायक, वक्रतुंड तू सिद्धिविनायक।
तुझिया दरीं आज पातलों, देई चित्त मज ध्याया।।१।।

तूं सकलांचा भाग्यविधाता, तूं विद्येचा स्वामी दाता।
ज्ञानदीप उजळून आमुचा, निमवी नैराश्याला।।२।।

तूं माता, तूं पिता जगीं या, ज्ञाता तूं सर्वस्व जगीं या।
पामर मी वर उणे भासती, तुझी आरती गाया।।३।।

मंगलमूर्ती मोरया। गणपतीबाप्पा मोरया।।

शंकराची आरती

लवथवती विक्राळा ब्रह्मांडीं माळा।।
विषें कंठ काळा त्रिनेत्रीं ज्वाळा।।
लावण्यसुंदर मस्तकीं बाळा।।
तेथुनियां जळ निर्मळ वाहे झुळझूळां।।१।।
जय देव जय देव श्रीशंकरा।।
आरती ओवाळूं तुज कर्पुरगौरा।।धृ०।।

कर्पुरगौरा भोळा नयनीं विशाळा।।
अर्धांगीं पार्वती सुमनांच्या माळा।।
विभूतीचें उधळण शितिकंठ नीळा।।
ऐसा शंकर शोभे उमावेल्हाळा।।जय०।।२।।

देंवी दैत्यीं सागरमंथन पैं केलें।।
त्यामाजीं अवचित हलाहल उठिलें।
तें त्वां असुरपणें प्राशन केलें।।
नीलकंठ नाम प्रसिद्ध झालें।।जय०।।३।।

व्याघ्रांबर फणिवरधर सुंदर मदनारी।।
पंचानन मनमोहन मुनिजनसुखकारी।।
शतकोटींचे बीज वाचे उच्चारी।।
रघुकुळटिळक रामदासा अंतरीं।।जय०।।४।।

दुगदिवीची आरती

दुर्गे दुर्घट भारी तुजविण संसारीं।।
अनाथनाथें अंबे करुणा विस्तारीं।।
वारीं वारीं जन्ममरणातें वारीं।।
हारीं पडलों आता संकट नीवारीं।। १ ।।
जय देवी जय देवी महिषासुरमथिनी।।
सुरवरईश्वरवरदे तारक संजीवनी।।जय० ।। धृ।।
त्रिभुवनभुवनीं पहातां तुजऐसी नाही।
चारी श्रमले परंतु न बोलवे कांही।।
साही विवाद करितां पडले प्रवाहीं।।
ते तूं भक्तांलागीं पावसि लावलाही।।जय० ।।२ ।।
प्रसन्नवदने प्रसन्न होसी निजदासा।।
क्लेशापासूनी सोडवी तोडीं भवपाशा।।
अंबे तुजवाचून कोण पुरविल आशा।।
नरहरि तल्लिन झाला पदपंकज लेशा।।जय० ।।३ ।।

पांडुरंगाची आरती

युगें अठ्ठावीस विटेवरी उभा।। वामांगीं रखुमाई दिसे दिव्य शोभा ।।
पुंडलिकाचे भेटी परब्रह्म आलें गा।।
चरणीं वाहे भीमा उद्धरीं जगा ।।१।।
जय देव जय देव जय पांडुरंगा ।।
रखुमाईवल्लभा राईच्या वल्लभा पावें जिवलगा ।। जय ।।धृ०।।
तुळसीमाळा गळां कर ठेवुनि कटिं ।। कांसे पीतांबर कस्तुरि लल्लाटीं ।।
देव सुरवर नित्य येती भेटी ।। गरुड हनुमंत पुढें उभे राहती ।। जय०।।
धन्य वेणूनाद अनुक्षेत्रपाळा ।। सुवर्णाची कमळें वनमाळा गळां ।।
राई रखुमाबाई राणीया सकळा ।।
ओंवाळीती राजा विठोबा सांवळा ।। जय०।।३।।
ओंवाळूं आरत्या कुरवंड्या येती ।। चंद्रभागेमाजी सोडुनियां देती।।
दिंड्या पताका वैष्णव नाचती ।।
पंढरीचा महिमा वर्णावा किती ।। जय०।।४।।
आषाढी कार्तिकी भक्तजन येती ।। चंद्रभागेमाजी स्नानें जे करिती ।।
दर्शन हेळामात्रें तयां होय मुक्ती ।।
केशवासी नामदेव भावें ओवाळिती ।।५।।

विठ्ठलाची आरती

येई गे विठ्ठले माझे माउलीचे ।।
निढळावरी कर ठेवुनि वाट मी पाहें ।। धृ० ।।
आलिया गेलिया हातीं धाडीं निरोप ।।
पंढरपुरीं आहे माझा मायबाप ।। येई० ।।१ ।।

पिवळा पीतांबर कैसा गगनीं झळकला ।।
गरुडावरी बैसूनि माझा कैवारी आला ।। येई० ।।२ ।।

विठोबाचें राज्य आम्हां नित्य दिपवाळी ।।
विष्णुदास नामा जीवें भावें ओवाळीं ।। येई० ।।३ ।।

प्रार्थना

घालीन लोटांगण वंदिन चरण। डोळयांनी पाहिन रुप तुझे।।
प्रेमें आलिंगन आनंदे पूजिन।। भावें ओंवाळिन म्हणे नामा।।१।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।२।।

कायेन वाचा मनसेंद्रियैंर्वा, बुद्धयात्मना वा प्रकृतिस्वभावत्
करोमि यद्यत् सकलं परस्मै, नारायणायेति समर्पयामि।।३।।

अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरि।।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं रामचंद्रं भजे।।४।।

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।५।।

।। मंत्रपुष्पांजली।।

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महि।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।
ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं
राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समंतपर्यायी स्यात्
सार्वभौम सार्वायुष आंतादापरार्धात्।।
पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराळिति तदप्येषं श्लोकोऽभिगीतो मरुतः
परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे।।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।
।।श्रीमंगलमूर्ति मोरया।।

श्रीगणपतिस्तोत्र

।।श्री गणेशाय नमः।।

।।नारद उवाच।।

प्रणम्य शिरसा देवं गौरीपुत्रं विनायकम्।।
भक्तावासं स्मरेन्नित्यमायुः कामार्थसिद्धये।।१।।
प्रथमं वक्रतुंडं च एकदंतं द्वितीयकम्।।
तृतीयं कृष्णपिंगाक्षं गजवक्त्रं चतुर्थकम्।।२।।
लंबोदरं पंचमं च षष्ठं विकटमेव च।।
सप्तमं विघ्नराजेंद्रं धूम्रवर्णं तथाष्टमम्।।३।।
नवमं भालचंद्रं च दशमं तु विनायकम्।।
एकादशं गणपतिं द्वादशं तु गजाननम्।।४।।
द्वादशैतानि नामानि त्रिसंध्यं यः पठेन्नरः।।
न च विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं प्रभो।।५।।
विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम्।।
पुत्रार्थी लभते पुत्रान्मोक्षार्थी लभते गतिम्।।६।।
जपद्गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत्।।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः।।७।।
अष्टेभ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च लिखित्वा यः समर्पयेत्।।
तस्य विद्या भवेत्सर्वा गणेशस्य प्रसादतः।।८।।

।। इति श्रीनारदपुराणे संकष्टनाशननाम श्रीगणपति स्तोत्रं संपूर्णम्।।

ॐ

।। श्लोक ।।

सदा सर्वदा योग तुझा घडावा। तुझे कारणी देह माझा पडावा।।
उपेक्षु नको गुणवंता अनंता। रघुनायका मागणे हेंची आता।।२।।
उपासनेला दृढ चालवावे। भूदेव-संतासी सदा नमावे।।
सत्कर्मयोगे वय घालवावे। सर्वांमुखी मंगल बोलवावे।।२।।

गणपतीबाप्पाच्या चरणी

अभिजीत

abhijeet.malap@gmail.com